अध्याय-4

प्रदेश की जनजातियाँ

मध्यप्रदेश भारत का हृदय-प्रदेश है। समीपवर्ती राज्य जैसे-उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ राज्यों से इसका गहरा नाता है। इन राज्यों की सीमाओं को छूते हुए, सबकी ऊर्जा समेटे यह प्रदेश विविधता में एकता का सबसे सुन्दर उदाहरण है।

मध्यप्रदेश की एक पहचान उसकी अनूठी जनजातीय संस्कृति है। 'जनजाति' को 'आदिवासी' भी कहा जाता है। ये दोनों शब्द इन जातियों की प्राचीनता का बोध कराते हैं। वर्तमान में भारत सरकार की अनुसूची में यहाँ के 43 जनजाति-समूह सम्मिलित हैं। अनुसूची में अंकित होने के कारण ही आदिवासी समुदायों को अनुसूचित जनजातियाँ कहा जाता हैं।

- **प्रमुख जनजातियाँ**

प्रदेश में **गौंड** जनजाति की आबादी अधिक है। इस समूह की अगरिया, असुर, भिम्मा, ढुलिया, ओझा, गोवारी, नगारची, मोघिया, दरोई, परधान आदि उप जनजातियाँ प्रमुख रूप से डिण्डोरी, मण्डला, जबलपुर, सिवनी, बालाघाट, शहडोल, अनूपपुर, सीधी, छिन्दवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, रायसेन आदि जिलों में निवास करती हैं। मध्यप्रदेश के एक बड़े हिस्से में गोंड शासकों का साम्राज्य रहा है। जिसमें प्रमुख रूप से रानी दुर्गावती, शंकरशाह व रघुनाथ शाह के नाम उल्लेखनीय है। गोंड राजाओं के बावन गढ़ प्रसिद्ध हैं। इनकी बोली गोंडी है।

बाँसुरी बजाते हुए भील युवक

भील प्रदेश का दूसरा बड़ा जनजाति समूह है। भिलाला, बारेला, पटलिया आदि इस समूह की प्रमुख उप जनजातियाँ हैं। भील श्रृंगार-प्रिय जनजाति है। इस समूह की स्त्रियाँ अधिक परिश्रमी होती हैं। पश्चिमी मध्यप्रदेश के झाबुआ, धार, खरगोन, बड़वानी, रतलाम, मंदसौर आदि जिलों में इनकी आबादी अधिक है। भीलों की बोली भीली और भिलालों की बोली भिलाली कहलाती है। पटलिया भीली की तथा बारेली भिलाली की उप बोली है। इस जनजाति में टंट्या भील, रघुनाथ मंडलोई तथा भीमा नायक जैसे महानायक भी हुए हैं, जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।

कोरकू - इनकी बसाहट विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वत-श्रेणियों के आसपास अधिक है। इस जनजाति समूह में बोपची, मवासी, निहाल, नाहुल, बोधी, बोडेया आदि उप जनजातियाँ शामिल हैं। रायसेन, सीहोर आदि जिलों में कोरकू जनजाति कारकू के नाम से जानी जाती है। खण्डवा, बुरहानपुर, हरदा, होशंगाबाद और

बैतूल इनके प्रमुख निवास स्थान हैं। इनकी बोली भी कोरकू कहलाती है।

बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति की श्रेणी में है। डिण्डोरी जिले का चाड़ा 'बैगाचक' के रूप में जाना जाता है, जो इस जनजाति का प्रमुख निवास-क्षेत्र है। इसके अलावा मण्डला, बालाघाट, शहडोल आदि जिलों में भी बैगा आबादी है। बैगा जड़ी-बूटियों के विशेष जानकार होते हैं। बिंझवार, भारोटिया, नरोटिया, रामभैना, कटभैना, दूध भैना, कोडवान, गोंडभैना, कुरका बैगा, सावत बैगा आदि इस समूह की उप जनजातियाँ हैं। ये पहले स्थान बदल-बदल कर बेवर खेती करते थे। परन्तु अब स्थायी रूप से कृषि को अपनाने लगे हैं। बैगा की बोली बैगानी कहलाती है।

भारिया जनजाति अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नाम से जानी जाती है। सिवनी और छिन्दवाड़ा जिलों में इसे भारिया अथवा भरिया तथा जबलपुर, मण्डला और शहडोल जिलों में भूमिया कहा जाता है। पाण्डो भी इसकी उपजाति मानी जाती है। छिन्दवाड़ा जिले के तामिया में हजारों फुट गहरी कटोरानुमा घाटी 'पातालकोट' में ये बसे हैं। इनका जीवन अत्यंत कठिन और संघर्षपूर्ण है, क्योंकि छोटी-छोटी जरूरतों के लिए घाटी चढ़कर ऊपर आना पड़ता है। इस जनजाति की बोली भरियाटी अथवा भरनोटी कहलाती है।

सहरिया-सहरिया शब्द अरबी के 'सहर' शब्द से बना माना जाता है, जिसका अर्थ 'भोर' है। वनोपज के लिए भोर से ही जंगल जाने के कारण यह जनजाति सहरिया कहलायी। इस जनजाति की मुख्य आजीविका जंगल और उसकी उपज पर ही निर्भर है। सहरिया प्रमुख रूप से श्योपुर, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, विदिशा और सीहोर जिलों में बसते हैं। इस जनजाति की आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति अत्यंत कमजोर है। सहरिया लोग हिन्दी की स्थानीय मिश्रित बोली का प्रयोग करते हैं।

अन्य जनजातियाँ

उपर्युक्त के अलावा मध्यप्रदेश में कोल, खैरवार, बियार, डामोर, पनिका, माझी, भील मीणा, भैना, आंध, मवासी, पान, पारधी(बहेलिया), साओंता, सौर, सावरा आदि जनजातियाँ भी निवास करती हैं। प्रदेश की अधिकांश जनजातियाँ आदिम हैं। इनका अतीत में अपने जातीय गौरव के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

- **आजीविका के आधार**

जंगल और जमीन जनजातियों की आजीविका के दो प्रमुख आधार हैं। इसलिए इन दोनों के प्रति उनकी अगाध आस्था है। जंगलों के निकट रहने के कारण पहले आदिवासी वनोपज पर ही अधिक निर्भर थे। उन्नत कृषि-ज्ञान की कमी के कारण अधिकांश जनजाति-समुदाय स्थायी खेती नहीं करते थे, लेकिन अब बैगा भी ढलानों पर 'बेवर खेती' नहीं करते। प्राय: सभी जनजातियाँ स्थायी खेती पर ध्यान देने लगी हैं। कोदो, कुटकी और मक्के की फसलें प्राय: सभी आदिवासी क्षेत्रों में होती हैं। मक्का भीलों का प्रिय खाद्यान्न है। कोदो-कुटकी गोंडी क्षेत्रों में अधिक उपयोग में आती है। ज्वार, बाजरा, अरहर, कुल्थी, मूँग, उड़द आदि दलहन और विभिन्न प्रकार के तिलहन की उपज आदिवासी सीमित साधनों से भी लेते हैं। खरीफ और रबी की एक-एक फसल प्रतिवर्ष ली जाती है। सहरिया तो साल में एक ही फसल ले पाते हैं। किसी वर्ष रबी की, तो किसी वर्ष खरीफ की फसल। ऐसा वे सिंचाई-साधनों के अभाव में करते हैं। कृषि-कार्य और वनोपज-संग्रह में पूरा परिवार जुटा रहता है, क्योंकि यह कार्य सभी जनजातियों का प्रमुख आर्थिक आधार है।

चक्की चलाती महिला

- **आवास**

आदिवासी बस्तियाँ प्राय: दुर्गम क्षेत्रों में हैं। वहाँ उपलब्ध साधनों से ही वे अपने आवास निर्मित करते हैं। गोंड अपने मकान लकड़ी, बाँस, मिट्टी, पुआल, छींद के पत्तों, फूस अथवा खपरैल का उपयोग कर बनाते हैं। घर के बीचों-बीच तीन ओर कमरों से घिरा आँगन होता है। आँगन के एक ओर गोशाला होती है। एक अतिथि कक्ष होता है, जिसे 'बंगला' कहा जाता है। घर का मुख्य द्वार 'फरिका' कहलाता है। यह सुंदर और सुसज्जित होता है। इसे समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। घर की लिपी-पुती दीवारों को गोंडिने 'नोहडोरा' (भित्तिचित्र) से अलंकृत करती हैं। प्रत्येक मकान के पीछे बाड़ी होती है, जिसमें साग-सब्जियाँ उगायी जाती हैं।

कोरकू अपने मकान दो समानांतर कतारों में बनाकर एक आड़ी शृंखला से जोड़ देते हैं। समानांतर कतारों के बीच का फासला लगभग 40 फुट होता है। सहरिया भी अपने मकान शृंखला में उलटे यू आकार के बनाते हैं। मकान परस्पर जुड़े रहते हैं। बीच में अतिथि गृह 'बंगला' होता है। सहरिया लोगों की इस बसाहट को 'सहराना' कहते हैं। सहराना साफ-सुथरा रखा जाता है।

कोरकू ओर सहरिया लोगों की मान्यता है कि इस प्रकार की विशेष बसाहट उनकी एकजुटता का प्रतीक है। विपत्ति के समय प्रयुक्त सांकेतिक ठक ठकाहट से एक दीवार से दूसरी दीवार होते हुए सूचना अंतिम मकान तक पहुँच जाती है।

भीलों के गाँव 'फलियों' में बंटे होते हैं। ये अपने कच्चे मकान की दीवारों और फर्श को गोबर से लीपते हैं, जबकि गोंड, कोरकू, बैगा, भारिया और सहरिया लोग दीवारों को पीली अथवा सफेद मिट्टी से पोतकर उन पर गेरू से चित्रकारी करते हैं। कोरकू लाल मिट्टी का भी उपयोग करते हैं।

- **गृहस्थी की सामग्री**

मध्यप्रदेश की सभी जनजातियाँ गृहस्थी में प्राय: खाट, चटाई, माचिया, अनाज कूटने की ढेकी, मूसल, चक्की, कुल्हाड़ी, कृषि के औजार तथा अनाज-भण्डारण की कोठी आदि रखती हैं। मिट्टी के बर्तनों का स्थान अब पीतल, काँसे, एल्युमीनियम और लोहे के बर्तन लेने लगे हैं। शिकार के लिए तीर-धनुष, मछली पकड़ने की कुमनी, ढुट्टी आदि का उपयोग भी लगभग सभी आदिवासी समुदाय करते हैं। गाय-भैंस के अलावा बकरी और मुर्गी पालन को वे महत्व देते हैं।

- **हाट-बाजार**

हाट-बाजार पशुओं के क्रय-विक्रय के केन्द्र होते हैं। वस्त्र-आभूषण तथा जरूरत की वस्तुएँ भी हाट-बाजारों में खरीदी जाती हैं। आदिवासी जीवन में साप्ताहिक हाटों का अत्यंत महत्व है, इसलिए उन्हें इनकी प्रतीक्षा रहती है। हाट-बाजार न केवल खरीदी- बिक्री के, बल्कि नाते-रिश्तेदारों से मिलने के भी सहज स्थान होते हैं। भीलों का 'भगोरिया हाट' बहुत प्रसिद्ध है। यह होली के अवसर विशेष पर उत्सवी हाट होता है, जो भीलांचल के चुने हुए स्थानों पर भरता है।

- **पहनावा**

प्राय: सभी आदिवासी पुरुष घुटनों तक धोती और उस पर बंडी पहनते हैं। पगड़ी या साफे का चलन भी लगभग सभी जनजाति समूहों में है। गोंड पुरुष कंधे पर पिछौरा डालकर सिर पर मुरेठा बाँधते हैं, जबकि भील सिर पर रंगीन साफा बाँधकर उस पर गोफन लपेटते हैं। कोरकू और भारिया धोती पर सूती बंडी या कुर्ता तथा सिर पर अंगोछा लपेटते हैं। बैगा घुटनों तक धोती लपेटकर उस पर काली बंडी पहनते हैं। सिर पर विशेष प्रकार की पगड़ी अलग पहचान देती है। सहरिया धोती के साथ रंगीन कमीज और साफा पहनते हैं।

गोंड़ स्त्री पुरुष

गोंड स्त्रियाँ काँछ लगाकर घुटनों तक साड़ी और उस पर पोलका पहनती हैं। भीलिनें रंगीन बेलबूटेदार भिलोड़ी लहंगे या घुटनों तक घाघरे पहनती हैं। उस पर झुलड़ी या काँचली कुर्ती पहनना उन्हें पसंद है। कोरकू और भारिया स्त्रियाँ रंग-बिरंगी साड़ी और चोली पहनती हैं। सहरिया स्त्रियाँ लहंगा, घाघरा, लुगड़ा, पेट्या और सलूखा पहनती हैं। बैगा स्त्रियाँ घुटनों तक साड़ी पहनती हैं। शिक्षा के प्रसार और नगरों के सम्पर्क में आने के कारण अब पहनावे में काफी अंतर दिखाई देने लगा है।

- **आभूषण**

आदिवासी स्त्री-पुरुषों को आभूषण पसंद हैं। सौभाग्य सूचक चुरियाँ तथा जुरिया, पटा बहुँटा, चुटकी तोड़ा, पैरी सतुवा, हमेल, ढार, झरका, तरकी बारी और टिकुसी आदि गोंडिनों के पारंपरिक आभूषण हैं। भीलिने सिर से पाँव तक आभूषणों से लदी रहती हैं। बोर, लाड़ियाँ, हँसली-हार, कथिर के कड़े, चाँदी का काँटा, कंदौरा, रंग-बिरंगे मोती की लड़ें और घुंघरू इनके मुख्य आभूषण हैं। कोरकू स्त्रियाँ तागली, हँसली, रंग-बिरंगे मोती-मूँगे, पोत और सिक्कों की मालाएँ पहनती हैं। झुमके, लटकन, टाप्स, कर्णफूल, लवंग, चाँदी या काँसे के कड़े, चूड़ियाँ, पैरों में कंकर छल्ले, पाजेब, मछली आकार की बिछिया और भुजाओं में बावट्या पहनना भी कोरकू स्त्रियों को भाता है। गोदना सभी जनजातीय स्त्रियों का प्रिय अलंकार है।

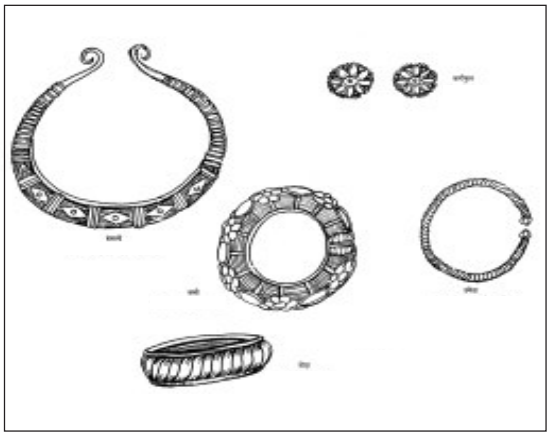

जनजातीय महिलाओं के आभूषण

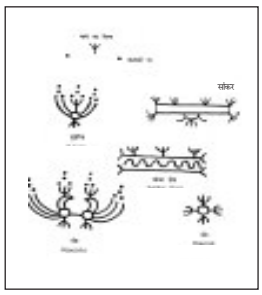

सुंदरता के लिए गोंदना

गोंड पुरुष चाँदी का चूड़ा, मोहर, बूँदा और अंगूठी पहनते हैं। भील कानों में चाँदी की लड़ें, कड़े और कमर में कंदौरा तथा घुँघरू धारण करते हैं। कोरकू गले में ताबीज व माला, कानों में जरुंग व मुरकी, हाथ में कड़ा और कंदोरा पहनते हैं। बैगा पुरुष भी नृत्य के समय मालाएँ और कर्णाभूषण पहनते हैं। जनजातीय संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। नृत्य, गीत, संगीत, चित्रकला एवं विविध प्रकार के शिल्प-कौशल का ज्ञान आदिवासी समुदायों को परंपरा से प्राप्त हुआ है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. मध्यप्रदेश में सबसे अधिक कौन-सी जनजाति पायी जाती है?

प्रश्न 3. भीलों के गाँव क्या कहलाते हैं?

प्रश्न 4. समान्यत: कौन-सी जनजाति जड़ी-बूटियों की विशेष जानकर है?

प्रश्न 5. जनजातियों का प्रिय अलंकार क्या कहलाता है?

प्रश्न 6. प्रदेश की जनजातियों की आजीविका का प्रमुख आधार क्या है? लिखिए।